स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन

सोहिल कुमार बंसल*
लाजवंती**

प्रत्येक विद्यार्थी का शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर विशिष्ट होता है, जो उसे स्वयं का आकलन करने में सहायक होता है; जिसके फलस्वरूप वह भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं व उद्देश्यों को स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से हम विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को ऊँचा उठा सकते हैं। यह शोध पत्र शोध अध्ययन पर आधारित है। जिसका उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना था। यह शोध अध्ययन सौद्देश्य न्यादर्श विधि से आगरा शहर के दयालबाग शिक्षण संस्थान (विश्वविद्यालय) के स्नातक स्तर के तीन संकायों का चयन कर, प्रत्येक संकाय से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा 50–50 विद्यार्थियों, जिनमें 25 छात्र व 25 छात्राएँ शामिल थीं, का चयन किया गया। इस प्रकार, कुल 150 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। उपकरण के रूप में शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु उनके स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों को लिया गया तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शर्मा एवं अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकी प्रयोग हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रोडक्ट मोमेंट सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में ज्ञात हुआ कि विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा में धनात्मक सहसंबंध है।

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया का औपचारिक संचालन स्कूल व कॉलेज, दोनों में किया जाता है। इनमें विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग तथा समुदाय के विद्यार्थी एक साथ शिक्षा ग्रहण कर अपना विकास करते हैं। सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर भिन्न होते हैं, जो उनमें मौलिकता एवं नवीनता की भावना को जन्म देते हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर विशिष्ट होता है जो उसे स्वयं का आकलन करने में सहायक होता है; जिसके फलस्वरूप वह भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं व उद्देश्यों को स्वरूप प्रदान करता है। प्रारंभ में वह कभी-कभी काल्पनिक स्तर के होते हैं, लेकिन मानसिक विकास के साथ-साथ वह इनमें परिवर्तन करता है और धीरे-धीरे वास्तविकता के धरातल पर अपनी

**शोधार्थी*, दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005
***प्रोफ़ेसर*, दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005

योजनाओं व उद्देश्यों को निरूपित करता है। उद्देश्यों का निर्धारण करने के बाद वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आकांक्षा रखता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। प्रत्येक विद्यार्थी की उद्देश्य प्राप्ति की तीव्रता अलग-अलग होती है तथा विद्यार्थी को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर आधार प्रदान करते हैं। चूँकि शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर विद्यार्थी-केंद्रित पक्ष होता है, इसलिए विद्यार्थी अपनी शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तरों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार तय करता है। कभी-कभी वह इतने ऊँचे आकांक्षा स्तर निर्धारित कर लेता है कि उन्हें प्राप्त करने में असफल भी हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से हम विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर को ऊँचा उठा सकते हैं। इस तरह शिक्षा विद्यार्थी का संतुलित तथा सर्वांगीण विकास करती है। विद्यार्थी की आंतरिक शक्तियों का विकास करती है; उन्हें भविष्य के लिए तैयार करती है तथा आत्मनिर्भर बनाती है।

समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

किसी भी विद्यार्थी के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विद्यार्थी अपनी शिक्षा किसी न किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही प्राप्त करता है, कोई भी विद्यार्थी अपने द्वारा मिलने वाली सफलता व असफलता को किस दृष्टि से स्वीकार करता है, यह सब उसके द्वारा निर्धारित शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर निर्भर करता है। एक ही कॉलेज में पढ़ने वाले समान आयु वर्ग के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। विद्यार्थी किसी भी लक्ष्य के लिए किए गए प्रथम प्रयास में ही अपनी शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण कर लेता है। उसके आधार पर वह अपनी शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में परिवर्तन लाता है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी के जीवन के निर्माण को प्रभावित करते हैं। विद्यार्थी अपनी शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि स्तर को अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर निर्धारित करता है। विद्यार्थी की आकांक्षाओं में माता-पिता की आकांक्षाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रायः उच्च सामाजिक, आर्थिक परिवारों के विद्यार्थी अवास्तविक उच्च स्तरीय आकांक्षाओं का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत निम्न अथवा औसत सामाजिक स्तर के विद्यार्थी भी ऊँची आकांक्षा सोचकर उच्च आकांक्षा स्तर निर्धारित करते हैं। इसकी झलक कॉलेज में देखी जा सकती है; कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक, आर्थिक स्तर भिन्न-भिन्न होता है। विद्यार्थी अपने सामाजिक-आर्थिक स्तर से बहुत ऊँचा आकांक्षा स्तर बना लेते हैं तथा कक्षा में उसके अनुसार ही उपलब्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उसके अनुरूप योग्यताओं के अभाव में जब वह असफलता प्राप्त करते हैं तो उससे उनका समायोजन प्रभावित होता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी योग्यताओं व कौशल के अनुरूप आकांक्षाओं का निर्धारण कर सकें।

© NCERT not to be republished

स्नातक स्तर वह स्तर होता है जिसके अंत तक विद्यार्थी अपनी शैक्षिक आकांक्षाओं व शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करते हैं तथा उसी को ध्यान में रखकर वह शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। अतः इस स्तर तक उसे अपनी योग्यताओं का ज्ञान होना अति आवश्यक है। अतः शोधार्थी द्वारा स्नातक स्तर की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध के अध्ययन हेतु शोध विषय के रूप में चयन किया गया है।

समस्या कथन

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

स्नातक स्तर

स्नातक स्तर से अभिप्राय विश्वविद्यालयी शिक्षा के स्तर से है, जिसमें विद्यार्थी इण्टरमीडिएट (10+2) कक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात् तीन वर्षीय डिग्री कोर्स का अध्ययन करता है।

कार्यात्मक परिभाषा

इस शोध अध्ययन में स्नातक स्तर से अभिप्राय, स्नातक स्तर के उन विद्यार्थियों से है जो दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) वाणिज्य संकाय, विज्ञान संकाय एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के तृतीय सेमिस्टर में अध्ययनरत हैं।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर

ड्रेवर (1956) के अनुसार, शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अर्थ है, एक व्यक्ति की अपने स्वानुभावों के द्वारा सफलता तथा असफलता की प्राप्ति।

कार्यात्मक परिभाषा

इस शोध अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा स्तर से अभिप्राय व्यक्ति द्वारा अपनी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, स्वयं के लिए निर्धारित लक्ष्यों, जिन तक वह पहुँचना व प्राप्त करना चाहता है, से है। यह लक्ष्य पद, आर्थिक स्थिति, शिक्षा आदि के संदर्भ में हो सकते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि

ट्रायलर (1968) के अनुसार, शैक्षिक उपलब्धि वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का समग्र योग होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

इस शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय (दयालबाग शिक्षण संस्थान, डी.ई.आई.) विश्वविद्यालय में संपूर्ण सत्र के दौरान चलने वाली सतत मूल्यांकन प्रक्रिया में स्नातक स्तर के तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों के सार्वजनिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत से है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे —

- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

© NCERT not to be republished

- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा व शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं —

- स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

अध्ययन का परिसीमांकन

- इस शोध अध्ययन को आगरा शहर के डी.ई.आई. विश्वविद्यालय तक ही सीमित रखा गया था।
- इस शोध अध्ययन में स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था।
- इस शोध अध्ययन में वाणिज्य संकाय, विज्ञान संकाय एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था।
- इस शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया था।

न्यादर्श का चयन

इस शोध अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में आगरा शहर के डी.ई.आई. विश्वविद्यालय के तीन संकाय— वाणिज्य संकाय, विज्ञान संकाय तथा सामाजिक विज्ञान संकाय में, वर्ष 2018–19 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था। प्रत्येक संकाय में से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा 50–50 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। इसमें 25 छात्र व 25 छात्राएँ शामिल थीं। इस प्रकार कुल 75 छात्र व 75 छात्राओं का चयन किया गया। अतः न्यादर्श के रूप में कुल 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

इस शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया था —

- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के सार्वजनिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत को लिया गया।
- शैक्षिक आकांक्षा स्तर के अध्ययन हेतु शर्मा और अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत मापनी का प्रयोग किया गया था।

अध्ययन की विधि

इस शोध अध्ययन की विधि वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि थी।

परिणाम एवं व्याख्या

स्नातक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा डी.ई.आई. विश्वविद्यालय के तीन संकायों में से 75 छात्रों का चयन कर, उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु उनके स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों को लिया गया, जिसके परिणाम तालिका 1 में दर्शाए गए हैं।

© NCERT not to be republished

तालिका 1— स्नातक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्र (75)	
		आवृत्ति	प्रतिशत
90–99	अति उच्च	0	0
80–89	उच्च	18	24
70–79	औसत	30	69
60–69		22	
50–59	निम्न	5	7
40–49	अति निम्न	0	0

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 75 छात्रों के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर उन्हें पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है। इन आवृत्ति वितरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाए जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, कक्षा में उपस्थिति एवं उनकी बुद्धिलब्धि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर के छात्रों को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर पाँच श्रेणियों— अति उच्च, उच्च, औसत, निम्न तथा अति निम्न में विभाजित किया गया। अति उच्च श्रेणी में शून्य प्रतिशत छात्र, उच्च श्रेणी में 24 प्रतिशत छात्र, औसत श्रेणी में 69 प्रतिशत छात्र, निम्न श्रेणी में 7 प्रतिशत छात्र तथा अति निम्न श्रेणी में शून्य प्रतिशत छात्र प्राप्त हुए। इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर के कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा डी.ई.आई. विश्वविद्यालय की तीन संकायों में से 75 छात्राओं का चयन कर, उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु उनके स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों को लिया गया, जिसके परिणाम तालिका 2 में दर्शाए गए हैं।

तालिका 2— स्नातक स्तर के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्राएँ (75)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*
90–99	अति उच्च	7	9
80–89	उच्च	29	39
70–79	औसत	27	49
60–69		10	
50–59	निम्न	2	3
40–49	अति निम्न	0	0

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर की 75 छात्राओं के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर उन्हें पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को सुव्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करके आवृत्ति वितरण किया गया है। इन आवृत्ति वितरण के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्राओं की

© NCERT not to be republished

शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, कक्षा में उपस्थिति एवं उनकी बुद्धिलब्धि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर की छात्राओं को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर पाँच श्रेणियों— अति उच्च, उच्च, औसत, निम्न तथा अति निम्न में विभाजित किया गया। अति उच्च श्रेणी में नौ प्रतिशत छात्राएँ, उच्च श्रेणी में 39 प्रतिशत छात्राएँ, औसत श्रेणी में 49 प्रतिशत छात्राएँ, निम्न श्रेणी में तीन प्रतिशत छात्राएँ तथा अति निम्न श्रेणी में शून्य प्रतिशत छात्राएँ हैं। इन छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन को तालिका 3 में दर्शाया गया है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 90–99 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले अति उच्च श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत शून्य है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत नौ है। 80–89 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले उच्च श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 24 है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत 39 है। 60–79 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले औसत श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 69 है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत 49 है। 50–59 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले निम्न श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत सात है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत तीन है तथा 40–49 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले अति निम्न श्रेणी के छात्र एवं छात्राओं का प्रतिशत शून्य है। तालिका 3 के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया या नहीं। यह जानने के लिए हमें मध्यमान व प्रमाणिक विचलन एवं इन दोनों के मध्य सार्थक अंतर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना करनी होगी, जिसे तालिका 4 में दर्शाया गया है।

तालिका 3— स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण

शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्र (75)		कुल छात्राएँ (75)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*	*आवृत्ति*	*प्रतिशत*
90–99	अति उच्च	0	0	7	9
80–89	उच्च	18	24	29	39
70–79	औसत	30	69	27	49
60–69		22		10	
50–59	निम्न	5	7	2	3
40–49	अति निम्न	0	0	0	0

© NCERT not to be republished

तालिका 4— स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

कुल विद्यार्थी (150)	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र 75	72.63	8.74	3.92	> .01	सार्थक
छात्राएँ 75	78.36	9.22			

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 150 छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 72.63 तथा 78.36 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.74 तथा 9.22 प्राप्त हुआ। दोनों छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। जिसका मान 3.92 प्राप्त हुआ, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, रुचि, बुद्धिलब्धि, कक्षा में उपस्थिति, माता-पिता का प्रोत्साहन एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ हो सकते हैं। छात्रों की तुलना में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है, क्योंकि छात्राएँ, छात्रों की तुलना में पढ़ने में अधिक रुचि लेती हैं। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

स्नातक स्तर के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा डी.ई.आई. विश्वविद्यालय के तीन संकायों में से 75 छात्रों का चयन कर उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शर्मा और अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसके परिणाम को तालिका 5 में दर्शाया गया है।

तालिका 5— स्नातक स्तर के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विवरण

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	श्रेणी	कुल छात्र (75)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*
48–56	उच्च	3	31
40–48		20	
32–40	मध्यम	22	51
24–32		16	
16–24	निम्न	14	18
8–16		0	

तालिका 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 75 छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शर्मा और अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर उन्हें कुल तीन श्रेणियों में बाँटा गया। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को सुव्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करके आवृत्ति वितरण किया गया है। इन आवृत्ति

© NCERT not to be republished

वितरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर के छात्रों को उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आधार पर तीन श्रेणियों— उच्च, मध्यम तथा निम्न में विभाजित किया गया। उच्च श्रेणी में 31 प्रतिशत छात्र, मध्यम श्रेणी में 51 प्रतिशत छात्र तथा निम्न श्रेणी में 18 प्रतिशत छात्र हैं। इन छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत आकांक्षा आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा डी.ई.आई. विश्वविद्यालय के तीन संकायों में से 75 छात्राओं का चयन कर उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु वी.पी. शर्मा और अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसके परिणाम को तालिका 6 में दर्शाया गया है।

तालिका 6— स्नातक स्तर की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विवरण

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	श्रेणी	कुल छात्राएँ (75)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*
48–56	उच्च	1	25
40–48		18	
32–40	मध्यम	25	59
24–32		19	
16–24	निम्न	12	16
8–16		0	

तालिका 6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर की 75 छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शर्मा और अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर, उन्हें कुल तीन श्रेणियों में बाँटा गया। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को सुव्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करके आवृत्ति वितरण किया गया है। इन आवृत्ति वितरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर की छात्राओं को उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आधार पर तीन श्रेणियों— उच्च, मध्यम तथा निम्न में विभाजित किया गया। उच्च श्रेणी में 25 प्रतिशत छात्राएँ, मध्यम श्रेणी में 59 प्रतिशत छात्राएँ तथा निम्न श्रेणी में 16 प्रतिशत छात्राएँ हैं। इन छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत आकांक्षा आदि हो सकते हैं।

स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन को तालिका 7 में दर्शाया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 7— स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक विवरण

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	श्रेणी	कुल छात्र (75)		कुल छात्राएँ (75)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*	*आवृत्ति*	*प्रतिशत*
48–56	उच्च	3	31	1	25
40–48		20		18	
32–40	मध्यम	22	51	25	59
24–32		16		19	
16–24	निम्न	14	18	12	16
8–16		0		0	

तालिका 7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 40–56 के बीच आकांक्षा स्तर प्राप्त करने वाले उच्च श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 31 है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत 25 है। 24–40 के बीच आकांक्षा स्तर प्राप्त करने वाले मध्यम श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 51 है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत 59 है। 8–24 के बीच आकांक्षा स्तर प्राप्त करने वाले निम्न श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 18 है, जबकि छात्राओं का प्रतिशत 16 है। तालिका 7 के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर पाया गया या नहीं। यह जानने के लिए हमें मध्यमान व प्रमाणिक विचलन एवं इन दोनों के मध्य सार्थक अंतर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना करनी होगी। तालिका 8 में इनके मध्य सार्थक अंतर को दर्शाया गया है।

तालिका 8 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 150 छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 34.08 तथा 33.54 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 9.22 तथा 8.36 प्राप्त हुआ। छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य सार्थक अंतर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जिसका मान 0.37 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई अंतर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

तालिका 8— स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

कुल विद्यार्थी (150)	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र 75	34.08	9.22	0.37	< .01	असार्थक
छात्राएँ 75	33.54	8.36			

© NCERT not to be republished

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सहसंबंध का अध्ययन

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा डी.ई.आई. विश्वविद्यालय के तीन संकायों में से 150 विद्यार्थियों जिनमें 75 छात्र व 75 छात्राएँ थीं, का चयन कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु उनके स्नातक स्तर के तृतीय सेमिस्टर के प्रतिशत प्राप्तांकों को लिया गया तथा उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शर्मा और अनुराधा (2009) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण से प्राप्त परिणामों को तालिका 9 में दर्शाया गया है।

तालिका 9 के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सहसंबंध पाया गया या नहीं। यह जानने के लिए हमें इन दोनों स्वतंत्र चरों के मध्य सार्थक सहसंबंध की जाँच के लिए सहसंबंध गुणांक की गणना करनी होगी, जिसे तालिका 10 में दर्शाया गया है।

तालिका 10— स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर संबंधी प्राप्तांकों का सहसंबंध गुणांक व सार्थकता स्तर का विवरण

चर (कुल विद्यार्थी 150)	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर	परिणाम
शैक्षिक उपलब्धि	0.86	> .01	सार्थक
शैक्षिक आकांक्षा स्तर			

तालिका 10 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के 150 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सहसंबंध की जाँच के लिए सहसंबंध गुणांक की गणना की गई, जिसका मान 0.86 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्षस्वरूप यह कह सकते हैं कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में उच्च धनात्मक सहसंबंध है। इस सहसंबंध के आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

तालिका 9— स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विवरण

शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत	श्रेणी	कुल विद्यार्थी (150)		शैक्षिक आकांक्षा स्तर	श्रेणी	कुल विद्यार्थी (150)	
		आवृत्ति	*प्रतिशत*			*आवृत्ति*	*प्रतिशत*
90–99	अति उच्च	7	5	48–56	उच्च	4	28
80–89	उच्च	47	31	40–48		38	
70–79	औसत	57	59	32–40	मध्यम	47	55
60–69		32		24–32		35	
50–59	निम्न	7	5	16–24	निम्न	26	17
40–49	अति निम्न	0	0	8–16		0	

© NCERT not to be republished

से उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निर्धारण होता है। जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है, उनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी अधिक होता है तथा जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है, उनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी कम होता है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सहसंबंध नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष दिए गए हैं —

- स्नातक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।
- स्नातक स्तर के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।
- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, रुचि, कक्षा में उपस्थिति, माता-पिता का प्रोत्साहन आदि हो सकते हैं। छात्रों की तुलना में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है।
- स्नातक स्तर के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत आकांक्षा आदि हो सकते हैं।
- स्नातक स्तर की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर पाया गया। इस अंतर का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत आकांक्षा आदि हो सकते हैं।
- स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में 0.01 सार्थकता स्तर पर अंतर नहीं पाया जाता है।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में 0.01 सार्थकता स्तर पर उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया। इस सहसंबंध के आधार पर अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निर्धारण होता है। अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी अधिक होता है तथा जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है, उनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी कम होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के आधार पर प्राप्त उपलब्धियाँ व उनसे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न शैक्षिक निहितार्थ दिए गए हैं —

- शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं, योग्यताओं आदि को पहचानने हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान करेंगे ताकि वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप अपने लिए उचित लक्ष्य का निर्माण कर सकें।
- शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए उचित मार्गनिर्देशन दिया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

- विद्यार्थियों की रुचियों, आवश्यकताओं, आकांक्षा स्तर तथा योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- कॉलेज में अच्छा वातावरण उपलब्ध कराना, जिससे विद्यार्थी अपनी शैक्षिक उपलब्धि व शैक्षिक आकांक्षा स्तर को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।
- कॉलेज में सभी विषयों को महत्व दिया जाए, जिससे उनका अध्ययन करके विद्यार्थी अपनी शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मूल्यांकन कर सकें।

संदर्भ

केम्पबेल. 2008. इफ़ैक्ट ऑफ़ अर्ली इंटरवेंशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड अकेडमिक अचीवमेन्ट. *ए फ़ोलो अप स्टडी ऑफ़ चिल्ड्रन फ्रॉम लॉ इनकम फ़ैमिली*.

कौल, लोकेश. 1984. *मैथोडोलॉजी ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नयी दिल्ली.

गिलफ़ोर्ड, जे.पी. 1956. *फ़ंडामेंटल स्टैटिसटिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन*. मैक्ग्रा हिल कम्पनी, न्यू यॉर्क.

गैरिट, हेनरी ई. 1986. *स्टैटिसटिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन*. लॉगमेन्स ग्रीन एंड कम्पनी, न्यू यॉर्क.

ट्रायलर, एल. ई. 1968. द *साइकोलॉजी ऑफ़ ह्यूमन डिफ़रेंसेस*. प्रिंटिस हॉल ऑफ़ इंडिया प्रा. लि., मुंबई.

ड्रेवर, जेम्स. 1956. ए *डिक्शनरी ऑफ़ साइकोलॉजी*. पेंग्विन आर-5, न्यू यॉर्क.

बुच, एम.बी. 1974. ए *सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. केस एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा.

बेस्ट, जान. डब्ल्यू. 1963. *रिसर्च इन जुकेशन*. प्रिन्टिस हाल ऑफ़ इंडिया प्रा.लि., नयी दिल्ली.

मूडी. 2008. फ़ैक्टर्स अफ़ेक्टिंग द लेवल ऑफ़ एसपिरेशन एंड एक्सपेक्टेशन ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स इन चाइना. *इंटरनेशनल डेज़रटेशन एब्स्ट्रेक्ट*. वॉल्यूम 68.

शर्मा, वी.पी. और अनुराधा गुप्ता. 1998. *मैनुअल फ़ॉर एजुकेशनल एसपिरेशन स्केल*. नेशनल साइकोलॉजीकल कोर्पोरेशन, आगरा.

© NCERT not to be republished